

# मलेरिया की रोकथाम मछली के भरोसे

डॉ. मनीष वैद्य

मध्यप्रदेश में जून माह के आते ही स्वास्थ्य महकमे में मलेरिया बुखार को लेकर चिंताएं बढ़ जाती हैं। जून से सितम्बर के बीच मलेरिया के रोगियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। लेकिन इस बार स्वास्थ्य विभाग कुछ राहत की सांस ले सकता है और इसका कारण है गैम्बूसिया मछली। स्वास्थ्य विभाग ठहरे हुए जल स्रोतों में गैम्बूसिया मछली छोड़ेगा जो मच्छरों के लार्वा को चट कर जाती हैं।

मलेरिया बुखार से निपटने के तमाम साधनों के बावजूद अब तक इस पर प्रभावी अंकुश नहीं लग पाया है। आम तौर पर मलेरिया एनॉफिलीज़ मच्छर द्वारा फैलता है। यह मच्छर पानी की सतह पर अण्डे देता है। यदि किसी प्रकार इन अण्डों को खत्म कर दिया जाए तो मच्छरों की संख्या में तेज़ी से कमी आ सकती है। इस तरह मलेरिया पर अंकुश लग सकता है। स्वास्थ्य विभाग ने अब मलेरिया बुखार पर नियंत्रण की यह नई जैविक प्रणाली लागू करने की पहल की है। इसमें तालाबों व साफ पानी के पोखरों में गैम्बूसिया मछलियां छोड़ी जाएंगी। ये मछलियां तेज़ी से प्रजनन कर अपनी संख्या बढ़ाती हैं और एनॉफिलीज़ मच्छर के लार्वा को खा जाती हैं।

ये मछलियां आकार में छोटी होती हैं। नर मछली 4-5 से.मी. तथा मादा मछली 6-8 से.मी. की होती हैं। अपने छोटे आकार की बदौलत वे पानी के अंदर उगी घास के बीच जाकर उससे चिपके मच्छर के अण्डों को खा जाती हैं। प्रजनन तेज़ गति से होने के कारण बहुत कम समय में इनकी तादाद बहुत बढ़ जाती है।

ये मछलियां खाने योग्य नहीं होतीं क्योंकि ये आकार में छोटी व कठोर होती हैं। ये सभी तरह के पानी में जीवित रह सकती हैं तथा कम-ज्यादा तापमान को सह सकती हैं। ये मछलियां शून्य डिग्री सेल्सियस तापमान पर भी जीवित रह सकती हैं। सतह पर भोजन करने वाली गैम्बूसिया मछली मच्छर के अण्डे सतह पर ही चट कर जाती हैं। इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाना ले जाना भी आसान है। इनका मुख्य भोजन मच्छरों के लार्वा ही हैं।

मादा मछली 3 से 6 माह में वयस्क हो जाती है। ये एक बार में 25 से 40 अण्डे देती हैं। कम उम्र में मादा वर्ष में 2 बार तक अण्डे दे सकती है जबकि वयस्क मछली 6 बार। इन मछलियों को गांवों में तालाबों, कुओं व अन्य स्रोतों में पाला जा सकता है।

गैम्बूसिया प्रजाति की ही गम्पी मछली भी इन्हीं विशेषताओं के कारण मलेरिया नियंत्रण में विशेष रूप से सहायक है। गम्पी मछली 10 दिन में वयस्क हो जाती है। यह वर्ष में 4 बार प्रजनन करती है। एक बार में यह सैकड़ों अण्डे देती है। इसका प्रजनन काल आम तौर पर अप्रैल से नवंबर होता है। इसे प्रदूषित पानी जैसे सीवेज, गटर, गड्ढों आदि में भी पाला जा सकता है। रुके हुए गंदे पानी में उत्पन्न होने वाले मच्छर कई तरह की बीमारियां व बुखार पैदा करते हैं। इन मच्छरों की पैदाइश मछलियों को पानी में डालकर रोकी जा सकती है। गैम्बूसिया एफिनिस लार्वा भक्षी मछलियां हैं।

प्रत्येक 24 घण्टे में एक मछली 100 लार्वा तक खा लेती है। प्रति वर्ग मीटर में 4 से 10 गैम्बूसिया मछली का संघनन किया जाता है। इससे 2 से 3 माह में मच्छर के लार्वा 70 से 100 प्रतिशत तक समाप्त हो जाते हैं। मलेरिया की व मच्छरों की रोकथाम के लिए इन मछलियों को गंदे पानी में छोड़ना लाभदायक है। (स्रोत फीचर्स)